विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 32 : नई दिल्ली : 2-8 नवम्बर 2018

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी चेन्नई में सानंद सुखसातापूर्वक विराजमान हैं। मानसून की वर्षा प्रारम्भ हो चुकी है। चेन्नई में दीपावली के आसपास मानसून आता है। चतुर्मास की समाप्ति में अब कुछ ही दिन शेष रहे हैं। चतुर्मास के उपरान्त आचार्यप्रवर २४ नवम्बर को चातुर्मासिक स्थल से प्रस्थान कर देंगे। तदुपरान्त पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आचार्यप्रवर तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों का स्पर्श करते हुए केन्द्रशासित प्रदेश 'पुडुचेरी' में भी पधारेंगे। नववर्ष प्रवेश का मंगलपाठ तमिलनाडु के कडलूर क्षेत्र में होगा, ऐसा पूर्व घोषित है। ११ नवम्बर को चेन्नई में समायोज्य दीक्षा समारोह के लिए अब तक दो समणियों के श्रेणी आरोहण सहित कुल १२ व्यक्तियों की दीक्षाएं घोषित हो चुकी हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण चेन्नई में

जैन विश्वभारती संस्थान का ११वां दीक्षांत समारोह समायोजित

२४ अक्टूबर। जैन विश्व भारती संस्थान-मान्य विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के ११वें दीक्षांत समारोह के रूप में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ से पूर्व कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, संस्थान के कुलाधिपति तथा कुलपति, विभिन्न मण्डलों एवं परिषदों के सदस्य आदि शोभायात्रा के रूप में कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ।

पूज्यप्रवर द्वारा किए गए नमस्कार महामंत्रोच्चार के पश्चात् संस्थान के कुलपति श्री बच्छराज दूगड़ ने संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कुलाधिपति श्रीमती सावित्री जिंदल से अनुमति प्राप्त कर दीक्षांत समारोह की कार्यवाही प्रारंभ करने की घोषणा की। कुलाधिपति श्रीमती जिंदल ने सम्पूर्ण विश्वविद्यालय परिवार को सच्चरित्र और नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित रहने का संकल्प कराया।

दीक्षांत समारोह में संस्थान के कुलपति श्री दूगड़ द्वारा पीएचडी के ६५ शोधार्थियों सहित कुल २६०४ विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की गईं। विभिन्न विभागों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले कुल ११ विद्यार्थियों को इस दौरान स्वर्ण पदक भी प्रदान किए गए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष श्री रामनिवास गोयल ने कहा--'व्यक्तिगत तौर पर मैं जैन समाज से बचपन से जुड़ा हुआ हूं। मुझे आचार्य तुलसी के दर्शन करने और उन्हें लालकिले से सुनने का मौका मिला। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को पढ़ने का अवसर मिला, किन्तु उनके दर्शन का अवसर नहीं मिला। लाडनूं में मुझे आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन का सौभाग्य मिला। उस समय जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय में भी जाने का मौका मिला। तीस वर्ष पूर्व शिक्षा के जगत में भारतीयता के संस्कार के विकास की दृष्टि से लाडनूं में जिस विश्वविद्यालय का बीजारोपण हुआ, वह आज वटवृक्ष का रूप लिए हुए है। मैं आज आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में इस दीक्षांत समारोह में सम्मिलित होकर स्वयं को गौरवान्वित और सौभाग्यशाली अनुभव कर रहा हूं। देश में अनेक सम्प्रदाय हैं, जो अपने अधिकारों

को सरकार से मांगते हैं, किन्तु एकमात्र तेरापंथ सम्प्रदाय ही है, जो स्वयं एक विश्वविद्यालय को संचालित कर रहा है और इसके माध्यम से समाज, राष्ट्र को बहुत कुछ दे रहा है। मैं इसके लिए तेरापंथ समाज के प्रति नतमस्तक हूं। जिन विद्यार्थियों को आज विभिन्न विषयों में उपाधियां दी गई हैं, वे निरन्तर प्रगति करते रहें और जो भी बाधाएं आएं, उन्हें चीरकर आगे बढ़ते रहें।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'जैन विश्व भारती संस्थान लगभग तीन दशकों से निरन्तर गतिशील है। सैंकड़ों-सैंकड़ों विद्यार्थी उससे लाभान्वित हो रहे हैं। विद्यार्थियों का लक्ष्य केवल बौद्धिक विकास ही नहीं होना चाहिए, वह तो मात्र सफलता का बीस प्रतिशत आधार है। उसका अस्सी प्रतिशत आधार तो भावात्मक विकास है। इसलिए बौद्धिक विकास के साथ-साथ भावात्मक विकास भी आवश्यक है। जैन विश्व भारती संस्थान बौद्धिक विकास के साथ भावात्मक, आध्यात्मिक विकास के लिए प्रतिबद्ध है। जिन्होंने इस संस्थान से उपाधि प्राप्त की है, वे भी इस बात के लिए प्रतिबद्ध बनें कि हमें अपने समाज व देश की तस्वीर बदलना है। इसके लिए भावात्मक और आध्यात्मिक दृष्टि से कार्य करना है।

आचार्यश्री तुलसी के युग में जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय का प्रारम्भ हुआ। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने उसे आगे बढ़ाया और आज आचार्यश्री महाश्रमणजी के युग में इस संस्थान के विकास के नए-नए क्षितिज उद्‌घाटित हो रहे हैं। आशा करते हैं कि इस संस्थान से निकलने वाले विद्यार्थी अपने जीवन, व्यवहार और आचरण से विशेष छाप छोड़कर इस संस्थान का नाम रोशन करेंगे।'

जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के अनुशास्ता परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में अनेक तत्त्वों के विकास की अपेक्षा होती है।उनमें एक तत्त्व है--ज्ञान। ज्ञान दुनिया की पवित्रतम चीजों में सर्वोपरि है। ज्ञान अपने आपमें आलोक होता है। उससे जीवन का पथ आलोकित होता है। प्राचीन साहित्य में ज्ञान को तलवार भी कहा गया है। अज्ञान को नष्ट करने के लिए ज्ञान रूपी तलवार का प्रयोग करना चाहिए। आदमी के भीतर ज्ञान भी है तो अज्ञान भी है। जितना-जितना ज्ञान प्रकट होता है, उतना-उतना अज्ञान दूर हो जाता है। आदमी स्वयं के ज्ञान के विकास का प्रयास करे और फिर दूसरों के ज्ञान को विकसित बनाने का भी यथासंभव प्रयत्न करे। आदमी ज्ञान रूपी दीये जलाता रहे तो अज्ञान रूपी अंधकार दूर होता रहेगा।

माना कि अंधकार है घना,
पर दीपक जलाना कब है मना।

जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय को एक दृष्टि से परम पूज्य गुरुदेव तुलसी का सुपुत्र कहा जा सकता है। उसके साथ जैन विश्व भारती जुड़ी हुई है। मानों यह संस्थान का सौभाग्य है कि उसे प्रथम अनुशास्ता के रूप में परम पूज्य आचार्य तुलसी प्राप्त हुए। वे स्वयं प्राध्यापक थे। जैन विश्व भारती संस्थान को दूसरे अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञजी प्राप्त हुए, जो स्वयं सारस्वत साधना के क्षेत्र में आगे बढ़े हुए थे।

इस संस्थान से पढ़कर निकलने वाले विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ संस्कार और आचार भी झलकना चाहिए। ज्ञान का पहला स्थान है तो उसके साथ आचार भी होना चाहिए। 'नाणस्स सारमायारो'--ज्ञान का सार है आचार। विद्यार्थी यह सोचे कि हमने ज्ञान ग्रहण कर अच्छी उपलब्धि प्राप्त की है, पर ज्ञान की एक निष्पत्ति आचार के रूप में होनी चाहिए। हमारे जीवन में विद्या का बहुत महत्त्व है। जीवन में विनय होता है तो विद्या आभूषित हो जाती है। विद्यार्थियों को ज्ञान के क्षेत्र में और ऊंची उड़ान भरने का प्रयास करना चाहिए।

आज के इस दीक्षांत समारोह में दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष श्री रामनिवासजी गोयल का भी समागमन हुआ है। शिक्षा भी सरकार का कार्य होता है। हमारी पदयात्रा के दौरान जगह-जगह विद्या संस्थान देखने को मिलते हैं। मुझे लगा कि सरकार और जनता दोनों शिक्षा के प्रति जागरूक हैं। शिक्षा के साथ-साथ भारत के विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा भी पुष्ट रहनी चाहिए। नैतिक मूल्य साथ में जुड़ जाते हैं तो शिक्षा और ज्यादा उपयोगी हो सकती है।

जैन विश्व भारती संस्थान की कुलाधिपति श्रीमती सावित्री जिन्दल संस्थान के साथ-साथ राजनीति से भी हुड़ी हुई है। राजनीति में भी मूल्यवत्ता बनी रहनी चाहिए। मूल्यवत्ता के रहने से राजनीति अच्छी सफलता को प्राप्त कर सकती है। भारत का सौभाग्य है कि इसे संतों का सान्निध्य मिलता रहा है। कहीं-कहीं राजनीति को भी संतों के पथदर्शन की अपेक्षा रहती है। राजनीति में काम करने वाले लोगों को यदि यदा-कदा संतों से प्रबोध, संबोध, मार्गदर्शन मिलता रहे तो वे लोग राजनीति में और ज्यादा सफल हो सकते हैं। शिक्षानीति हो या राजनीति, सब नीतियों में अहिंसा, नैतिकता, मूल्यवत्ता का प्रभाव रहना चाहिए।

आदमी के जीवन में नैतिकता रहनी चाहिए। नैतिकता का एक आयाम है आर्थिक शुचिता। जो अर्थ उपयोग में लिया जा रहा है, वह शुद्ध है या अशुद्ध। दो शब्द प्रयुक्त हुए हैं अर्थ और अर्थाभास। जो पैसा न्याय, नीति, नैतिकता से अर्जित है, वह अर्थ होता है और जो पैसा अन्याय, अनीति, अनैतिकता से अर्जित होता है, वह अर्थाभास है। आर्थिक शुचिता मजबूरी में रखनी पड़े, वह अलग बात है। आदमी का स्वयं का मनोभाव ऐसा बनना चाहिए कि मुझे आर्थिक शुचिता का विकास करना है। शिक्षा, राजनीति आदि सभी क्षेत्रों में आर्थिक शुचिता को महत्त्व मिले तो भारत और आगे बढ़ सकेगा।

आज जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह समायोजित है। संस्थान से जुड़े हुए सभी सदस्यों, भले वे प्रबन्धक हैं, शिक्षक हैं, शिक्षार्थी हैं, में आध्यात्मिकता व नैतिकता की भावना परिपुष्ट रहे, ज्ञान का अच्छा विकास होता रहे। संस्थान ज्ञान और सत्संस्कारों को विकसित करने में अपना अच्छा योगदान देता रहे। मंगलकामना।'

आचार्यप्रवर ने उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 'शिक्षा पद' के रूप में पवित्र सूक्तों का उच्चारण करवाया। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के कुलसचिव श्री विनोद कक्कड़ ने किया।

समणश्रेणी के एक मासिक प्रशिक्षण शिविर का शुभारम्भ

२५ अक्टूबर। परमपूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज समणश्रेणी के एक मासिक प्रशिक्षण शिविर का शुभारम्भ हुआ। इस संदर्भ में आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में समायोजित उपक्रम में समणीवृन्द ने गीत का संगान किया। समणी नियोजिका चारित्रप्रज्ञाजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

साध्वीवर्याजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें तेरापंथ के रूप में एक विलक्षण धर्मसंघ प्राप्त हुआ। इस धर्मसंघ की आचार्य परंपरा तेजस्वी, यशस्वी, ओजस्वी और वर्चस्वी रही है। उस गौरवशाली परंपरा में नवम अधिशास्ता हुए आचार्य तुलसी। उन्होंने अपने जीवन में अनेक क्रान्तियां घटित कीं। उनमें दो क्रांतिया थीं-समणश्रेणी का प्रवर्तन और पारमार्थिक शिक्षण संस्था का प्रादुर्भाव। उन्होंने न केवल ये दोनों क्रांतिया घटित कीं, अपितु दोनों श्रेणियों के सदस्यों के साधना, शिक्षा और विकास के अनेकानेक आयाम उद्घाटित किए। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने भी इन श्रेणियों को विकास पथ पर गतिमान रखा और आज आचार्यश्री महाश्रमणजी के नेतृत्व में भी ये दोनों श्रेणियां विकास की दृष्टि से उर्ध्वारोहण कर रही हैं। विकास की दृष्टि से प्रशिक्षण भी आवश्यक होता है। आचार्यप्रवर ने महती कृपा कर समणश्रेणी के लिए

चेन्नई में एक मासिक प्रशिक्षण कार्यक्रम रखने का अनुग्रह किया। मुमुक्षुश्रेणी पर भी आचार्यप्रवर की कृपा बरसी है। कुछ मुमुक्षु बहनों को करीब चार मास तक गुरुकुलवास में रहकर प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो रहा है और कुछ मुमुक्षु बहनों को एक मास तक यहां रहकर प्रशिक्षित होने का मौका प्राप्त हो रहा है। इस एक मासिक प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कर समणश्रेणी और मुमुक्षुश्रेणी और अधिक तेजस्विता के साथ अपनी साधना को आगे बढ़ाती हुई गुरुदृष्टि के अनुरूप धर्मसंघ की प्रभावना में और ज्यादा योगभूत बने।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'समणश्रेणी की स्थापना के लिए परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने जो श्रम, समय और चिंतन लगाया, वह इतिहास का एक दुर्लभ दस्तावेज है। समणश्रेणी ने न केवल देश में, अपितु विदेशों में भी तेरापंथ धर्मसंघ के मिशन को फैलाया है, फैला रही है। इस श्रेणी को तीन-तीन आचार्यों का सम्पोषण, संरक्षण प्राप्त हुआ है। आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन नेतृत्व में समणश्रेणी अनेक दिशाओं में कार्य कर रही है। आचार्यप्रवर ने इस बार समणियों को प्रशिक्षण का भी विशेष अवसर प्रदान किया है। समणश्रेणी के सदस्यों में भी यह भावना रहती है कि हमें गुरु उपासना का अधिक से अधिक अवसर प्राप्त हो। समय-समय पर उन्हें अवसर मिलता भी है। उन्हें उपासना में आनन्द भी आता है। समणश्रेणी की सदस्याओं को जो यह एक मासिक उपासना और प्रशिक्षण का अवसर प्राप्त हो रहा है, वह महत्त्वपूर्ण है। इस प्रशिक्षण से उन्हें आत्मबोध प्राप्त हो, उनके गुणों का विकास हो, उनकी वृत्तियों का परिष्कार हो और वे परम समाधि का अनुभव करें। आचार्यप्रवर के निर्देशन में साध्वीवर्याजी समणश्रेणी की दृष्टि से जागरूक रहती हैं। मैं यह मंगलकामना करती हूं कि यह कार्तिक मास समणश्रेणी के लिए नए इतिहास का सृजन करने वाला हो और समणीवृन्द की गुणवत्ता में और अधिक वृद्धि करने वाला हो। यह श्रेणी अपना विकास करती हुई धर्मसंघ की प्रभावना में अपना योगदान देती रहे।'

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी परम्परा में कुछ दिन ऐसे मानें गए जो आगम स्वाध्याय के लिए स्वीकृत नहीं हैं। हमारे यहां संत समुदाय में एक संकेत वाक्यांश चलता है--'आ भा का चै' 'आ' अर्थात् आषाढ़ और आश्विन की पूर्णिमा, 'भा' अर्थात् भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा, 'का' यानी कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा और 'चै' यानी चैत्र शुक्ला पूर्णिमा। ये पांच तिथियां और इनके बाद की एकम अर्थात् आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा के बाद श्रावण शुक्ला एकम, भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा के बाद आश्विन शुक्ला एकम, आश्विन शुक्ला पूर्णिमा के बाद कार्तिक शुक्ला एकम, कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा के बाद मृगशिर कृष्णा एकम और चैत्र शुक्ला पूर्णिमा के बाद वैशाख कृष्णा एकम--ये दस दिन आगम स्वाध्याय के लिए वर्जित माने गए हैं। कल आश्विन शुक्ला पूर्णिमा थी और आज कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा है, इसलिए मैंने इन दोनों दिनों में 'ठाणं' आगम का पाठ नहीं किया।

जीवन की एक उपलब्धि होती है प्रसाद की प्राप्ति। प्रसाद के संदर्भ में कहा गया है कि गुरु के प्रसाद की इच्छा रखनी चाहिए। प्रसाद का अर्थ है प्रसन्नता। गुरु की प्रसन्नता शिष्यों पर बनी रहे, शिष्यों में ऐसी पवित्र कामना बनी रहनी चाहिए।

प्रसाद के अन्य पहलु भी बताए गए। उनमें पहला है--देह प्रसाद अर्थात् शरीर की प्रसन्नता रहनी चाहिए। प्रसन्नता का अर्थ निर्मलता भी है। शरीर की स्वस्थता बनी रहे, यह देह प्रसाद का तात्पर्यार्थ है। शरीर की ऊपरी निर्मलता है मैल का साफ हो जाना। उससे ज्यादा मूल्यवान है भीतरी निर्मलता। यह निर्मलता तभी होती है, जब शरीर के सभी अवयव स्वस्थ होते हैं, पेट साफ होता है। उसके लिए भोजन

पर भी ध्यान देना अपेक्षित होता है। रसना विजय से शरीर की निर्मलता प्राप्ति में सहायता प्राप्त होती है।

दूसरा प्रसाद है--मनःप्रसाद। मन की निर्मलता। शारीरिक स्वास्थ्य के साथ चित्त की प्रसन्नता भी बहुत आवश्यक होती है। मनुष्य के चित्त में यदा-कदा अशान्ति हो सकती है। उसका एक कारण बनता है- गुस्सा। किसी भी व्यक्ति को ज्यादा गुस्सा नहीं करना चाहिए। कोई बात कहनी हो तो उसमें शान्ति रखनी चाहिए। गुस्से में आकर नहीं बोलना चाहिए। गुस्सा आदमी की कमजोरी होती है। वह आदमी की पराजय होती है। मनःप्रसाद के लिए अपेक्षित है कि आदमी गुस्से से बचने का प्रयास करे। मनःप्रसाद के लिए यह भी अपेक्षित है कि आदमी अपराध न करे। अपराध करने वाले के मन में पकड़े जाने के भय से अशान्ति रह सकती है। तनाव रह सकता है। मनःप्रसाद के लिए निरपराधता अपेक्षित होती है। मन में समता रहे तो मनःप्रसन्नता वृद्धिगंत हो सकती है।

तीसरा प्रसाद बताया गया-- दृष्टि प्रसाद। आदमी सम्यक् दृष्टिकोण वाला रहे। उसके लिए आवश्यक है- अनाग्रह। याथार्थ्य के प्रति समर्पण और उसके अन्वेषण का पुरुषार्थ होता है तो दृष्टि प्रसाद रह सकता है। इस प्रकार दृष्टि प्रसाद के लिए आग्रह के त्याग की अपेक्षा रहती है।

प्रसन्नता को हर्ष के रूप में लिया जाए तो हर्ष तो निमित्त सापेक्ष होता है। जो वस्तु चाहिए, वह मिल गई, उससे जो प्रसन्नता हुई, वह निमित्त सापेक्ष प्रसन्नता है। दूसरे प्रकार की प्रसन्नता भीतरी होती है, वह आत्मोत्थ होती है, आत्मा से प्रसूत होती है। एक होता है कुण्ड का पानी और दूसरा होता है कुए का पानी। कुण्ड का पानी बाहर से आया हुआ होता है, जबकि कुए का पानी भीतर का होता है। कुए में बाहर के पानी की अपेक्षा नहीं रहती। निमित्त सापेक्ष प्रसन्नता कुण्ड के पानी और आत्मोत्थ प्रसन्नता कुए के पानी की तरह होती है। आदमी को परिस्थिति सापेक्ष खुशी में ज्यादा लयलीन नहीं होना चाहिए और परिस्थिति सापेक्ष समस्या में ज्यादा दुःखी भी नहीं बनना चाहिए। समस्या और दुःख एक नहीं हैं। समस्या के होने पर भी मानसिक रूप से प्रसन्न रहा जा सकता है।

चित्त की प्रसन्नता बहुलांश में व्यक्ति के स्वयं के हाथ की बात होती है। सामने वाले व्यक्ति से इस रूप में प्रभावित नहीं होना चाहिए कि अमुक व्यक्ति साथ में रहेगा तो समाधि रहेगी और अमुक व्यक्ति रहेगा तो असमाधि हो जाएगी। किसी के साथ रहने अथवा न रहने से अपनी समाधि प्रभावित होने का अर्थ है कि अपनी प्रसन्नता का स्वामी व्यक्ति स्वयं नही हैं। उसकी प्रसन्नता का मालिकाना दूसरों के हाथ में है। आदमी को अपनी सुख-सम्पदा दूसरों के मालिकाना में नहीं देनी चाहिए। स्वयं की प्रसन्नता स्वयं के हाथ में रहे, ऐसी साधना होनी चाहिए।

समणियों के एक मासिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का यह उद्घाटन सत्र है। गुरुकुलवास में उपासना के साथ एक मासिक प्रशिक्षण कार्यक्रम एक सुन्दर अवसर है। यह मानों खुराक प्राप्ति का समय है। साध्वीवर्या की देखरेख और निर्देशन में प्रशिक्षण कार्य अच्छे रूप में चले।'

पूज्यप्रवर ने प्रशिक्षण शिविर के उद्घाटन के संदर्भ में साध्वीवर्याजी और समणीवृन्द को मंगलपाठ सुनाया।

समाधि से मिलता है समाधान

२६ अक्टूबर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'शास्त्रकार ने भौगोलिक दृष्टि से छह प्रकार के अनृद्धिमान पुरूष बताए हैं-- हैमवतज, हैरण्यवतज, हरिवर्षज, रम्यकवर्षज, कुरुवर्षज ओर अन्तर्द्वीपज।

अकर्मभूमियों में कोई महापुरूष पैदा नहीं होता। कर्मभूमियों में तीर्थंकर, चक्रवर्ती आदि पैदा होते हैं। अकर्मभूमियों और अन्तर्दीपों में तीर्थंकर आदि नहीं होते, इस दृष्टि से वहां पैदा होने वाले मनुष्यों को अनृद्धिमान बताया गया है।

आदमी को अपने जीवन में अपनी संपदा और सामर्थ्य का विकास करना चाहिए। संपदा दो प्रकार की होती हैं-- बाह्य और आन्तरिक। पैसा, पद, प्रतिष्ठा आदि बाह्य संपदा है। संसार में बाह्य संपदा का भी महत्त्व है। कोई धनाढ्य हो और उदार भी हो तो लोगों में उसकी प्रतिष्ठा भी हो सकती है। इसी प्रकार उच्च पद पर आसीन होना भी प्रतिष्ठा की बात हो सकती है, किन्तु पैसा, पद आदि अधिकतम इस जन्म तक साथ रह सकते हैं। संयमरूपी और तपरूपी आन्तरिक संपदा का प्रभाव इस जन्म के बाद भी साथ जा सकता है। साधु के जीवन में शारीरिक स्वस्थता, सक्षमता आदि के रूप में बाह्य संपदा अपेक्षित होती है। शारीरिक संपदा का अपना महत्त्व होता है। शरीर अस्वस्थ और अक्षम होता है तो साधु और गृहस्थ दोनों के लिए कठिनाई हो सकती है। साधु को आत्मसंपदा के विकास का प्रयास करना चाहिए।

जिससे समाधान प्राप्त हो, वह समाधि है। दसवेआलियं में चार प्रकार की समाधियां बताई गई हैं-- विनय समाधि, श्रुत समाधि, तप समाधि और आचार समाधि। विनय एक समाधि है। वह अध्यात्म की एक सम्पदा भी है। विनय करने से चित्त को समाधि मिलती है। समाधान भी मिल सकता है। हमारा विनय याथार्थ्य के प्रति हो। तीर्थंकरों, सिद्धों के प्रति हमारी भक्ति रहे। आचार्यों, उपाध्यायों और साधुओं के प्रति भी विनय का भाव रहे। ज्ञान के प्रति भी विनय का भाव रहना चाहिए। विनय करने से चित्त में शांति, समाधि रह सकती है। श्रुत से भी समाधि की प्राप्ति होती है। आगम आदि ग्रंथों के स्वाध्याय, मनन, पुनरावर्तन आदि से भी समाधि रह सकती है। गृहीत ज्ञान पुनरावर्तन के द्वारा सुरक्षित रह सकता है। उसके साथ नए-नए ज्ञान के ग्रहण करने का प्रयास भी रहना चाहिए। जिनके पास श्रुत है, वे यथासंभव दूसरों को पढाने का प्रयास करें तो उनका स्वयं का ज्ञान भी और अधिक पुष्ट हो सकेगा और दूसरों को भी ज्ञानार्जन करने का अवसर मिल सकेगा।

तप से समाधि की प्राप्ति होती है। नवकारसी एक छोटा-सा तप है, उसे प्रतिदिन कर लिया जाए तो भी आत्मारूपी घट में धर्म का संचय होता रह सकता है। प्रहर तप, उपवास, विगयवर्जन आदि के रूप में भी यथानुकूलता तप होते रहना चाहिए। प्रातराश से पहले-पहले प्रतिदिन नमस्कार महामंत्र की एक माला फेरना तपः समाधि का एक छोटा-सा प्रयोग हो सकता है।

आचार से भी समाधि मिल सकती है। साधु हो या श्रावक, दोनों का आचार अच्छा रहना चाहिए। अपने द्वारा स्वीकृत आध्यात्मिक नियमों का दृढ़ता के साथ पालन करना चाहिए। आचार की समाधि अच्छी रहती है तो शान्ति मिलती है, समाधान मिलता है। चारों समाधियों को आध्यात्मिक लाभ के लिए आत्मसात करना चाहिए।

बाह्य सम्पदा का अपना स्थान है। बाह्य सम्पदा अधिकतम इस जन्म तक साथ रह सकती है। आगे तो आध्यात्मिक सम्पदा ही काम आ सकती है। इसलिए आध्यात्मिक सम्पदा को वृद्धिगंत करने का प्रयास करना चाहिए। बाह्य रूप में सम्पदा आए या आपदा आदमी के मन में समता का भाव रहना चाहिए।'

आज मेलमरवत्तूर आदिपरा शक्तिपीठ के संस्थापक श्री अम्मा के उत्तराधिकारी श्री अनबलगनजी आदि लोग आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। उन्होंने मेलमरवत्तूर आदिपरा शक्ति मंदिर के विषय में अवगति प्रस्तुत करते हुए पूज्यप्रवर से वहां पधारने का अनुरोध किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय मे अवगति प्रदान की।

परमपूज्य माणकगणी का सश्रद्धा स्मरण

२७ अक्टूबर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'समय बीत रहा है। समय के अपने-अपने माप हैं, जैसे- समय, अवलिका, मुहूर्त, दिन-रात, पखवाड़ा, महीना, वर्ष आदि। एक बड़ा काल खण्ड है-कालचक्र। जैन वाङ्मय में एक बहुत बड़ा कालचक्र बताया गया है। वह गणना से भी पार है। बीस कोटि-कोटि सागरोपम का एक कालचक्र होता है। इतने बड़े कालचक्र में कितने-कितने जन्म एक आत्मा के हो जाते हैं। एक कालचक्र में बारह भाग होते हैं। एक खण्ड में छह और दूसरे खण्ड में छह--यों कुल बारह भाग होते हैं। प्रथम खण्ड को अवसर्पिणी और दूसरे खण्ड को उत्सर्पिणी कहा गया। अवसर्पिणी के छह अर (भाग) इस प्रकार हैं--

१. सुषम-सुषमा- यह एकांत सुख वाला अर होता है।

२. सुषमा- इस अर में पहले अर की अपेक्षा कुछ ह्रास होता है। इसमें एकान्त सुख नहीं रहता, पर सुख रहता है।

३. सुषम-दुःषमा- इस अर में सुख के साथ कुछ दुःख भी होने लगता है।

४. दुःषम-सुषमा- इसमें दुःख के साथ सुख होता है।

५. दुःषमा- यह दुःख की स्थिति वाला होता है। वर्तमान में पांचवा अर चल रहा है।

६. दुःषमा-दुःषमा- यह अत्यन्त दुःख वाला अर होता है।

इसी प्रकार उत्सर्पिणीकाल में छह अर होते हैं। अवसर्पिणी में ह्रास की ओर गति होती है। आयुष्य, सुख, शरीर की अवगाहना का क्रमशः ह्रास होता है।

पंचम अर में तीर्थंकर नहीं होते। इस अर में जन्मे हुए व्यक्ति को केवलज्ञान की प्राप्ति नहीं होती और मोक्ष भी प्राप्त नहीं होता। इस प्रकार कालचक्र घूमता रहता है। यह समय की व्यवस्था है। बीस कोटि-कोटि सागरोपम का प्रलम्ब कालमान भी कभी पूरा हो जाता है। आज तक अनन्त-अनन्त अवसर्पिणियां और उत्सर्पिणियां बीत चुकी हैं, आगे भी बीतती ही रहेंगी।

आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि गया हुआ समय लौटता नहीं है। इसलिए आदमी को समय का अच्छा उपयोग करना चाहिए। पेड़ का पका हुआ पत्ता रात्रियों के बीतने पर गिर जाता है। इसी प्रकार कभी जीवन भी समाप्त हो जाता है। कभी-कभी तो अकल्पित घटित हो जाता है। कल्पना तो लम्बे आयुष्य की होती है, किन्तु जीवन जल्दी ही अवसान को प्राप्त हो जाता है। आदमी को प्राप्त जीवनकाल में खूब अच्छा धार्मिक आयास करना चाहिए।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज कार्तिक कृष्णा तृतीया है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के छठे आचार्य परम पूज्य माणकगणी का आज महाप्रयाण दिवस है। वे संसारपक्ष में जयपुर से थे। वे श्रीमज्जयाचार्य के युग में दीक्षित हुए थे। जयाचार्य जयपुर में पधारे। तब उन्होंने बालक माणक को देखा। उन्होंने उनके 'बाबा' लाला लिछमणदासजी से माणक की दीक्षा के विषय में बात की। बाद में बालक माणक की दीक्षा भी हो गई। माणकगणी की दीक्षा से पूर्व श्रीमज्जयाचार्य ने बालक माणक के संदर्भ में यहां तक संकेत दे दिया था कि संघ के प्रति मेरे उत्तरदायित्व का भार तो मघजी संभाल लेंगे, परन्तु मघजी को भी कोई भार संभालने वाला चाहिएगा। एक आश्चर्य की-सी बात लगती है कि जिस बालक ने दीक्षा भी नहीं ली, उसके लिए जयाचार्य ने कृपापूर्ण महान आकलन कर लिया। मुनि माणक ने बहिर्विहार भी किया। श्रीमज्जयाचार्य के महाप्रयाण के बाद तेरापंथ धर्मसंघ के पंचम आचार्य परमपूज्य मघवागणी बने। कालान्तर में मघवागणी ने सरदारशहर स्थित 'जम्मड़ों की हवेली' में चैत्र कृष्णा द्वितीया के दिन मुनि माणक को अपना उत्तराधिकारी

घोषित किया और उसके तीन दिन बाद ही अर्थात् चैत्र कृष्णा पंचमी की रात्रि में परमपूज्य मघवागणी का महाप्रयाण हो गया। फिर परमपूज्य माणकगणी आचार्य पद पर आरूढ हुए। उन्होंने शासन की बागडोर संभाली। करीब चार-पांच वर्ष का आचार्यकाल बीतने पर माणकगणी विक्रम संवत् १९५४ का चतुर्मास सुजानगढ़ में कर रहे थे। वे उस समय युवावस्था में थे, जीवन के तैंयालीसवें वर्ष में थे। उस चतुर्मास में उनका स्वास्थ्य दुष्प्रभावित हो गया। धीरे-धीरे स्वास्थ्य चिन्ताजनक बन गया। विज्ञ अनुभवियों ने भी इसका संकेत किया। आखिर कार्तिक कृष्णा तृतीया की रात में माणकगणी ने अन्तिम श्वास लिया। आज की तिथि में हमारे धर्मसंघ का एक सूर्य अदृश्य हो गया था। धर्मसंघ को लम्बेकाल तक माणकगणी का नेतृत्व प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला। उन्होंने चार-पांच वर्षों तक धर्मसंघ की आचार्य के रूप में सेवा की। हमारे धर्मसंघ का छठा अध्याय आज की रात्रि में संपन्न हो गया। माणकगणी के जीवन से हमें अध्यात्म की, साधना की प्रेरणा मिलती रहे। मैं उनका श्रद्धा के साथ स्मरण करता हूं।'

अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता परिसंपन्न

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में अणुव्रत न्यास के तत्त्वावधान में आयोजित अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता का त्रिदिवसीय फाइनल राउण्ड आज परिसंपन्न हुआ। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता का उपक्रम समायोजित हुआ। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के माध्यम से कितने-कितने विद्यार्थियों को अणुव्रत से जुड़ने का मौका मिलता होगा। अणुव्रत के गीत जीवन पर भी अपना प्रभाव डाल सकते हैं। अणुव्रत न्यास नैतिकता के क्षेत्र में अच्छा कार्य करता रहे। बच्चे अच्छे होते हैं तो समाज और देश अच्छा हो सकता है। विद्यार्थियों को अणुव्रत से उपयुक्त रूप में लाभान्वित होने का अवसर प्राप्त होता रहे।'

प्रतियोगिता के प्रतियोगियों ने पूज्यप्रवर से नशा मुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी श्री सम्पतमल नाहटा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अजीज पब्लिक स्कूल-राजनांदगांव से समागत विद्यार्थियों ने गीत को सामूहिक प्रस्तुति दी तथा सुश्री एकीना भारती ने गीत का संगान किया।

अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता के फाइनल राउंड में २० राज्यों के ५०० से अधिक विद्यार्थी संभागी बने।

इट्ठयावन घड़ी और दो घड़ी

२८ अक्टूबर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धास्पद्ध आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'शास्त्रकार ने उत्सर्पिणी के छह प्रकार बताए हैं। एक कालचक्र बीस कोटि-कोटि सागरोपम का होता है। उसके दो विभाग होते हैं- अवसर्पिणी ओर उत्सर्पिणी। दोनों के छह-छह विभाग होते हैं। उन विभागों के नामों में अंतर नहीं हैं, किन्तु उनमें क्रम का अंतर होता है। घड़ी के सुइयों की तरह पहले छह में अवरोहण और बाद के छह में आरोहण होता है। इन छह-छह विभागों को अर कहा जाता है।

अवसर्पिणी काल के छठे आरे के अंत के समय ह्रास की पराकाष्ठा होती है। उसके बाद विकास का क्रम शुरू होता है। वहां से उत्सर्पिणी काल शुरू होता है। अवसर्पिणी काल का छठा अर और उत्सर्पिणी काल का पहला अर समान होता है और फिर क्रमशः विकास होता जाता है।

आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि काल कितना ही लंबा क्यों न हो, वह कभी न कभी बीतता ही

है। उसे समय का अच्छा उपयोग करना चाहिए। रात को सोने से पहले यह ध्यान दिया जा सकता है कि आज अच्छा कार्य क्या किया और बुरा कार्य क्या किया? जैसे व्यापारी पैसे का हिसाब लगाता है, वैसे ही आदमी को अपने समय का हिसाब लगाना चाहिए कि मेरा समय किस-किस कार्य में लगा। मेघ तो बरसता है। उसके पानी को कोई कुण्ड आदि में इकट्ठा करे तो वह पीने के काम आ सकता है, कितना उपयोगी हो सकता है। वही पानी गंदी नाली में गिर जाए तो वह गंदा हो सकता है। पानी बरसता है, उसे ग्रहण किस रूप में किया जाता है, यह महत्त्वपूर्ण बात होती है। समय भी बादल के रूप में है। वह तो व्यतीत हो रहा है। ध्यातव्य यह है कि कौन व्यक्ति समय का क्या उपयोग कर रहा है। आदमी को समय का सदुपयोग कर उसे सार्थक बनाना चाहिए।

दिन-रात्रि में तीस मुहूर्त होते हैं। अड़तालीस मिनिट का एक मुहूर्त होता है। चौबीस मिनिट की एक घड़ी होती है। इस प्रकार दिन-रात्रि में साठ घड़ियां होती हैं। गृहस्थ को इन साठ घड़ियों में सांसारिक कार्य भी करना पड़ सकता है। इसके साथ यह चिन्तनीय है कि वह धार्मिक कार्य में अपने कुछ समय का नियोजन करता है या नहीं। कहा गया--

इट्ठ्यावन घड़ी काम की, दो घड़ी राम की
इट्ठ्यावन घड़ी घर की, दो घड़ी हर की
इट्ठ्यावन घड़ी कर्म की, दो घड़ी धर्म की
इट्ठ्यावन घड़ी पाप की, दो घड़ी आप की
इट्ठ्यावन घड़ी जीव की, दो घड़ी शिव की

अर्थात् साठ घड़ियों में से दो घड़ी के समय का तो आत्मा के लिए, विशेष साधना के लिए नियोजन करना चाहिए। दो घड़ियों में एक सामायिक हो सकती है। प्रतिदिन एक सामायिक हो जाए तो मानना चाहिए कि दो घड़ी का समय धर्म के लिए नियोजित हो गया। प्रतिदिन सुबह-सुबह और शनिवार की सायं सात से आठ बजे के बीच सामायिक हो जाए तो एक अच्छा क्रम हो सकता है। प्रतिदिन एक सामायिक न हो सके तो सप्ताह में कम से कम एक सामायिक करने का प्रयास करना चाहिए।

जिस प्रकार भोजन शरीर की खुराक है। उसी प्रकार सामायिक आत्मा का खुराक है। ऐसा कहा जा सकता है कि सामायिक आत्मा का भोजन और नमस्कार महामंत्र की माला आत्मा का अल्पाहार (नाश्ता) है। आदमी का दिमाग सांसारिक कार्यों में लगा रहता है। एक सामायिक करने से उसे कुछ विश्राम मिल सकता है और धार्मिक दिशा में उसकी कुछ गति हो सकती है। सामायिक में स्वाध्याय, ध्यान, जप, प्रवचन श्रवण आदि हों तो और अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है। कुछ समय धार्मिक साधना में नियोजित किया जाता रहे तो कुछ संतुलन हो सकता है। केवल भौतिकता में रहना आदमी के लिए नुक्सानदेह हो सकता है, इसलिए भौतिकता और आध्यात्मिक का संतुलन रहे तो गृहस्थ जीवन में भी कुछ अंशों में आत्मकल्याण की दिशा में गति हो सकती है।'

नवी मुम्बई से समागत पूर्व सांसद श्री संजीव नाइक ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा--'मुझे प्रतिवर्ष आचार्य महाश्रमणजी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है, यह मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता और गौरव का विषय है। मैं जन्म से भले जैन नहीं हूं, किन्तु अपने विचारों और आचरण से स्वयं को जैन तेरापंथी ही मानता हूं। आचार्यश्री कितनी कष्टपूर्ण यात्रा कर यहां पधारे हैं। हम मुम्बईवासी भी आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप हमें मुम्बई में पधारकर दर्शन देने की कृपा करें।'

आज तेरापंथ युवक परिषद, चेन्नई द्वारा सामायिक कार्यशाला का समायोजन किया गया। परम पूज्य

आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'आज तेरापंथ युवक परिषद द्वारा सामायिक कार्यशाला रखी गई है। युवकों में धार्मिक साधना के प्रति रुझान बढ़ता रहे। शुभाशंसा।' मुनि दीपकुमारजी ने सामायिक कार्यशाला के अन्तर्गत प्रशिक्षण दिया।

आज परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के अंतर्गत अणुव्रत जीवन विज्ञान अकादमी के तत्त्वाधान में जीवन विज्ञान राष्ट्रीय सेमिनार समायोजित हुआ। इस सेमिनार में ६२ व्यक्ति संभागी बने। संभागियों को परम पूज्य आचार्यप्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान की। सेमिनार के विभिन्न सत्रों में मुनि कुमारश्रमणजी, जीवन विज्ञान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमारजी तथा साध्वी शुभ्रयशाजी ने प्रशिक्षण दिया। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबन्ध न्यासी श्री सम्पतमल नाहटा का भी व्यक्तव्य हुआ।

आज सीबीआई के पूर्व डायरेक्टर डॉ. डी.आर. कार्तिकेयन तथा सीबी सीआईडी के पूर्व डीजीपी नरेन्द्रपाल सिंह ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

अनेकान्त और अनाग्रह से सुलझती हैं गुत्थियां

२६ अक्टूबर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी सृष्टि सदा सर्वत्र एकरूप नहीं रहती, इसमें परिवर्तन भी आता है। आदमी के जीवन में भी परिवर्तन आ सकता है। द्रव्य में स्थायित्व और अस्थायित्व दोनों होते हैं। तीन तत्त्व हैं-- उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य। आत्मा स्थायी है, उसके असंख्य प्रदेश हैं और उसमें चैतन्य गुण है। यह ध्रौव्य है। आत्मा के पर्यायों में परिवर्तन होता रहता है। एक ही आत्मा कभी नारक, कभी तिर्यंच, कभी मनुष्य और कभी देव रूप में उत्पन्न हो सकती है। द्रव्य का किसी रूप में उत्पाद भी होता है, विनाश भी होता है और वह ध्रुव भी रहता है। एक सोने को कटोरे को सोने का कंगन बना दिया गया तो कटोरे का विनाश और कंगन का उत्पाद हुआ। इन दोनों स्थितियों में स्वर्ण तत्त्व यथावत रहा, यह ध्रौव्य है।

हर पदार्थ किसी दृष्टि से नित्य और किसी दृष्टि से अनित्य होता है। जैन दर्शन एकांत नित्यता और एकांत अनित्यता को नहीं मानता, वह नित्यानित्यवाद को मानता है। अनेकांत और अनाग्रह को सम्मुख रखकर बात की जाए तो अनेक दार्शनिक मतभेद दूर हो सकते हैं, अनेक गुत्थियां सुलझ सकती हैं। आदमी को व्यवहारिक जीवन में भी अनावश्यक आग्रह नहीं रखना चाहिए।'

नैतिकता के शक्तिपीठ से मिले नैतिकता की प्रेरणा

गत कल आयोजित आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के वार्षिक अधिवेशन के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा--'आचार्य तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान गंगाशहर में स्थित है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी का महाप्रयाण गंगाशहर में हुआ था। उनका समाधिस्थल 'नैतिकता का शक्तिपीठ' के रूप में स्थापित हुआ। आचार्य तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान को केन्द्रीय संस्था का दर्जा प्राप्त है। उस संस्थान की कल साधारण सभा आयोजित हुई। यह संस्थान 'नैतिकता का शक्तिपीठ' नाम के अनुरूप नैतिकता की प्रेरणा देने वाला बना रहे। संस्थान के द्वारा अन्य आध्यात्मिक प्रेरणात्मक उपक्रम भी यथौचित्य चलते रहें, यह अभिलषणीय है।'

कार्यक्रम के दौरान आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री लूणकरण छाजेड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

त्रिदिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन समायोजित

परमाराध्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में

आयोजित त्रिदिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन का आज शुभारंभ हुआ। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'ज्ञानशाला बालपीढ़ी के ज्ञानवर्धन और संस्कार निर्माण की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। इससे जुड़े हुए लोग जो निरवद्य प्रयास करते हैं, आध्यात्मिक सेवा करते हैं, वह अपने आप में अनुमोदनीय है। कितने-कितने लोग ज्ञानशाला में प्रशिक्षण देते हैं और वे स्वयं भी उसके लिए प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। प्रशिक्षकों को भी प्रशिक्षण दिया जाता है। कुल मिलाकर यह एक विस्तृत कार्य है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा तेरापंथ समाज की प्रतिनिधि संस्था है, 'संस्था शिरोमणि' है। उसके तत्त्वावधान में ज्ञानशाला का उपक्रम संचालित होता है। ज्ञानशाला की फुलवारी खूब विकसित होती रहे। इसकी खूब अच्छी रक्षा होती रहे और यह आध्यात्मिक आनन्द देने वाली बनी रहे। मंगलकामना।

कार्यक्रम में चेन्नई ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने गीत का संगान किया। तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हंसराज बैताला और ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चौपड़ा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आयोजित त्रिदिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन में करीब २७५ व्यक्ति संभागी बने। संभागियों को परम पूज्य आचार्यप्रवर से पावन संबोध प्राप्त हुआ। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने भी उन्हें उत्प्रेरित किया। विभिन्न सत्रों में साध्वी सुमतिप्रभाजी, साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी, साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी शरदयशाजी, साध्वी ऋद्धिप्रभाजी, समणी नियोजिका चारित्रप्रज्ञाजी, समणी ऋजुप्रज्ञाजी, समणी मल्लिप्रज्ञाजी और समणी विनयप्रज्ञाजी ने प्रशिक्षण दिया। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री गौतमचन्द चोरड़िया और शेरवुड हॉल स्कूल की प्राध्यापक रुचि मोहन्ता के भी प्रशिक्षणात्मक वक्तव्य हुए। श्री मुकेश गिड़िया और सुश्री सेजल समदड़िया ने योगासन, प्राणायाम आदि के प्रयोग करवाए।

समणी नियोजिका चारित्रप्रज्ञाजी सहित समणीद्वय को श्रेणी आरोहण की स्वीकृति

१ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने चेन्नई में ११ नवम्बर को आयोज्य दीक्षा समारोह में समणी नियोजिका चारित्रप्रज्ञाजी और समणी आगमप्रज्ञाजी को श्रेणी आरोहण (साध्वी दीक्षा प्रदान करने) की स्वीकृति प्रदान की है।

स्मारणा : चारित्रात्माओं के प्रवेश व जुलूस के संदर्भ में

- भवन प्रवेश आदि के समय पर महिलाएं, कन्याएं द्वार आदि पर कुंकुम, केसर आदि का थाल लेकर खड़ी न रहें। न कुंकुम, केसर आदि का प्रयोग पुरुषों द्वारा किया जाए।
- फर्रियां, गुब्बारे आदि न लगाए जाएं।
- हाथी, ऊंट आदि पशु नहीं होने चाहिए।
- किसी प्रकार का नृत्यात्मक प्रयोग नहीं होना चाहिए।
- ज्ञानशाला आदि की झांकियां हों तो आपत्ति नहीं।
- महिलाएं मस्तक पर कलश लेकर न चलें।
- संघीय संस्थाओं व इतर संस्थाओं द्वारा तथा स्कूल, सेना आदि व व्यक्तिगत स्तर पर भी बैंड बाजा, ढोल आदि का प्रयोग नहीं हो।
- ''सामैया-सांमेला'' न किया जाए।
- जुलूस आदि में निर्मित द्वार (तोरण) आदि पर आचार्यों का खड़ा फोटो काम में न लिया जाए।
- चारित्रात्माओं के जुलूस आदि के प्रसंग पर गृहस्थों द्वारा खाद्य-पेय पदार्थ वितरित किया जाए तो उसका

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

उपयोग कर कागज या प्लास्टिक बोतल को मार्ग में फैंकना हिंसाकारक, अव्यावहारिक व पर्यावरण को दूषित करने वाला हो सकता है।

• आचार्यप्रवर के नगर प्रवेश आदि के अवसर पर मार्ग अच्छा हो तो प्रवास स्थल पहुंचने के लिए सामान्यतया जुलूस आदि में चक्कर न लिया जाए। **(श्रावक सन्देशिका २६६-२७५, २७७)**

परमाराध्य आचार्यप्रवर का संभावित यात्रा पथ (बेंगलुरु उपनगरीय)

२१ जून २०१९	सिंगासान्द्रा	२२ जून	कोरमंगला (आडगुड़ी) शान्तिनगर (सायं)
२३ जून	वसन्तनगर	२४ जून	कोक्सटाउन
२५ जून	गांधीनगर	२६ जून	शेशाद्रीपुरम-मलेश्वरम्
२७ जून	यशवंतपुर	२८ जून	जिन्दल
२९ जून से ३ जुलाई	भिक्षु धाम	४ जुलाई	टी. दासरहल्ली
५ जुलाई	राजाजी नगर	६ जुलाई	विजयनगर
७ जुलाई	चामराजपेट बसवनगुड़ी (सायं)	८ जुलाई	जयनगर बन्सकरी (सायं)
९ जुलाई	हनुमंथ नगर	१० जुलाई	राज राजेश्वरी नगर
११ जुलाई	केन्गेरी बिग्रेड पेनारमापा (सायं)	१२ जुलाई	तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केन्द्र

नोट- संभावित यात्रा पथ में अपेक्षानुसार परिवर्तन किया जा सकता है।

सुधारकर पढ़ें

विज्ञप्ति अंक २८ पृष्ठ १२-- आचार्य महाप्रज्ञ स्मृति ग्रंथ के लिए आचार्य महाप्रज्ञजी से संबंधित आलेख और 1 ãej.k bãs mahaprajnasmriti@gmail.com पर भेजें। अधिक जानकारी के लिए फोन नं. ०१५८१-२२६११६ पर संपर्क किया जा सकता है।

विज्ञप्ति अंक २८ पृष्ठ ८ की प्रथम पंक्ति इस प्रकार पढ़ें- महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार श्री महावीर गोलेच्छा (बालोतरा-अहमदाबाद) को प्रदान किया गया।

मुनि अशोककुमारजी (सूरतगढ़) गणमुक्त

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने २६ अक्टूबर को मुनि अशोककुमारजी (सूरतगढ़) का जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की साधु-संस्था से संबंध विच्छेद किया है।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला